

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি॥

॥শ্রী-কামাসিকাষ্টকম্ ॥

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
॥श्री-कामासिकाष्टकम् ॥

श्रीमान् रेक्कटनाथार्यः करितार्किककेसरी।
वेदान्ताचार्यरयो मे सन्निधन्तां सदा हृदि॥

श्रुतीनामुत्तरं भागं रेगरत्याश्च दक्षिणम्।
कामादधिरसन् जीयात् कश्चिदद्भुत केसरी ॥ १ ॥

तपनेन्द्रिग्नि नयनः तपानपचिनोतु नः।
तापनीय रहस्यानां सारः कामासिका हरिः ॥ २ ॥

आकठमादिपुरुषं
कठीररमुपरि कुठितारातिम्।
रेगोपकठ सप्तात्
विमुक्त रैकुठ बह्मतिमुपासे ॥ ३ ॥

बन्धुमखिलस्य जन्तोः
बन्धुर पर्यङ्क बन्ध रमणीयम्।
विषम विलोचनमीडे
रेगरती पुलिन केलि नरसिंहम् ॥ ४ ॥

स्य स्वानेषु मरुदणान् नियमयन् स्वाधीन सर्वेन्द्रियः
पर्यङ्क स्थिर धारणा प्रकटित प्रत्यङ्गुथारस्थितिः।
प्रायेण प्रणिपेदुषां प्रभुरसौ योगं निजं शिक्षयन्
कामानातनुतात् अशेष जगतां कामासिका केसरी ॥ ५ ॥

विकस्वर नथ स्वरु ऋत हिरण्य रङ्गः स्थली
निरर्गल विनिर्गलदुधिर सिन्धु सन्ध्यायिताः।
अरन्ध्र मदनासिका मनुज पथं रत्नस्य माम्
अहंप्रथमिका मिथः प्रकटिताहरा बाहरः ॥ ६ ॥

सटा पटल तीषणे सरभसाट्टहासोद्धटे
स्फुरतक्रुधि परिस्फुटद् भ्रुकुटिकेपि रक्ते कृते।

কৃপা কপট কেসরিন্ দনুজ ডিম্ব দত্ত স্তনা
সরোজ সদৃশা দৃশা ব্যতিভিষজ্য তে ব্যজ্যতে ॥ ৭ ॥

অযি রক্ষতি রক্ষকৈঃ কিমন্যৈঃ
অযি চারক্ষতি রক্ষকৈঃ কিমন্যৈঃ।
ইতি নিশ্চিত ধীঃ শ্রযামি নিত্যং
নহরে বেগবতী তটশ্রযং স্বাম্ ॥ ৮ ॥

ইথং স্তুতঃ সকৃদিহাষ্টভিরেষ পদ্যৈঃ
শ্রীবেঙ্কটেশ রচিতৈস্ত্রিদশেন্দ্র বন্দ্যঃ।
দুর্দান্ত ঘোর দুরিত দ্বিরদেন্দ্র ভেদী
কামাসিকা নরহরির্বিতনোতু কামান্ ॥ ৯ ॥

॥ ইতি শ্রী-কামাসিকাষ্টকম্ সমাপ্তম্ ॥

কবিতার্কিকসিংহায় কল্যাণগুণশালিনে।
শ্রীমতে বেঙ্কটেশায় বেদান্তপুরে নমঃ ॥